तीव्र पुरुषार्थ - 4

➢➢ वैराग्य वृत्ति

➳ _ ➳ वैराग्य राग का उल्टा रूप नहीं है

→ सांसारिक वस्तुओं से भाग जाना वैराग नहीं

→ "मैंने टोली खानी छोड़ दी, पर इस बात का भी अहंकार हो गया" - यह वैराग नहीं

→ "भोजन छोड़ देना और भोजन में डूब जाना" - यह दोनों ही वैराग नहीं

→ "देहधारियों को छोड देना और देहधारियों में डूब जाना" - यह दोनों ही वैराग नहीं

→ संसार में डूब जाना और संसार से भाग जाना" - यह दोनों ही वैराग नहीं

→ वैराग्य अर्थात किनार करना नहीं

➳ _ ➳ वैराग्य राग का अभाव है

→ जैसे अन्धकार प्रकाश का अभाव है

→ "न तो अपमान का भय है और न मान की कामना है" - यह है वैराग्य

→ "संसार में रहते हुए भी नहीं रहना" - यह है वैराग्य

→ "भोजन स्वीकार करना पर अनासक्त रहना" - यह है वैराग

→ "देहधारियों के बीच रहना पर उनसे detach रहना" - यह है वैराग

➢➢ वैराग्य लाने के लिए क्या करें ?

➳ _ ➳ इन जगह पर जाओ

→ हॉस्पिटल

→ वृधाआश्रम

→ शमशान घाट

→ मुर्दा घर

→ अनाथ आश्रम

→ पागल खाना

→ जेल

→ कुम्भ मेले की भीड़, नहाने वाला गंदा पानी

→ झुग्गी झोपड़ियां

→ प्राकृतिक आपदाओं का स्थान

Avyakt Murli Refrence :- Page Number 5 Of Teevra Purusharth Book